

12

हॉकी और राष्ट्रीय पहचान: भारतीय खेल के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक आयाम

Rahul Kumar*

Research Scholar, Jayoti Vidyapeeth Women's University, Jaipur, Rajasthan, India.

*Corresponding Author: rahulbaba30@gmail.com

सार

इस अध्याय में भारतीय हॉकी के विकास और भारतीय राष्ट्रीय पहचान के निर्माण के बीच संबंध का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन किया जाएगा। औपनिवेशिक काल में हॉकी के प्रसार, भारतीय खिलाड़ियों की अंतरराष्ट्रीय उपलब्धियों, विशेष रूप से ओलंपिक सफलता, तथा ध्यानचंद जैसे खिलाड़ियों की भूमिका का विश्लेषण किया जाएगा। हॉकी ने भारत में खेल गौरव, सामूहिक पहचान और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा की भावना को मजबूत करने में योगदान दिया। स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के बाद हॉकी की बदलती स्थिति, क्षेत्रीय एवं सामुदायिक भागीदारी तथा लोकप्रिय संस्कृति में इसके प्रतिनिधित्व पर भी चर्चा की जाएगी। अध्याय यह स्पष्ट करने का प्रयास करेगा कि हॉकी केवल प्रतिस्पर्धात्मक खेल नहीं रही, बल्कि विभिन्न ऐतिहासिक चरणों में भारतीय समाज के लिए राष्ट्रीय गौरव और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम भी बनी।

शब्दकोश

भारतीय हॉकी, राष्ट्रीय पहचान, खेल संस्कृति, औपनिवेशिक भारत, ओलंपिक, ध्यानचंद, खेल इतिहास।

प्रस्तावना**हॉकी और भारतीय राष्ट्रीय पहचान****Hockey and Indian National Identity**

हॉकी भारतीय खेल इतिहास में केवल एक प्रतिस्पर्धात्मक खेल के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्रीय गौरव और सामूहिक पहचान से जुड़े सांस्कृतिक माध्यम के रूप में भी महत्वपूर्ण रही है। औपनिवेशिक काल से लेकर स्वतंत्र भारत तक भारतीय हॉकी की उपलब्धियों ने देश की खेल पहचान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में योगदान दिया। विशेष रूप से ओलंपिक में भारतीय हॉकी टीम की सफलता ने खिलाड़ियों को राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक के रूप में स्थापित किया।

राष्ट्रीय पहचान का निर्माण केवल राजनीतिक एवं सामाजिक संस्थाओं से नहीं होता, बल्कि कला, साहित्य, संस्कृति और खेल भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हॉकी के संदर्भ में खिलाड़ियों की सामूहिक उपलब्धियाँ, राष्ट्रीय टीम का प्रतिनिधित्व और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में सफलता भारतीयों के बीच साझा गौरव की भावना से जुड़ी रही हैं। इस प्रकार हॉकी का इतिहास भारतीय राष्ट्रीय पहचान के विकास के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण माध्यम प्रस्तुत करता है।

भारत में हॉकी का ऐतिहासिक उद्भव और विकास

Historical Emergence and Development of Hockey in India

भारत में आधुनिक फील्ड हॉकी का विकास औपनिवेशिक काल के दौरान हुआ। ब्रिटिश सैन्य संस्थानों, शैक्षणिक संस्थानों और क्लबों के माध्यम से यह खेल विभिन्न भारतीय क्षेत्रों तक पहुँचा। भारतीय खिलाड़ियों ने शीघ्र ही इस खेल में दक्षता प्राप्त की और स्थानीय प्रतियोगिताओं से आगे बढ़कर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई।

भारतीय हॉकी के संस्थागत विकास में सैन्य सेवाओं और विभिन्न खेल संगठनों की भूमिका महत्वपूर्ण रही। खेल के लिए आवश्यक प्रशिक्षण, प्रतियोगिताओं और संगठित टीम संरचनाओं ने भारतीय खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार किया।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में भारतीय हॉकी की लोकप्रियता तेजी से बढ़ी। भारतीय खिलाड़ियों की तकनीकी कुशलता और टीम-आधारित खेल शैली ने अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में प्रभाव स्थापित किया। विशेष रूप से ओलंपिक में भारतीय टीम की सफलता ने हॉकी को देश की खेल संस्कृति का प्रमुख हिस्सा बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

औपनिवेशिक भारत में हॉकी और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ

Hockey and the Socio-Cultural Content of Colonial India

औपनिवेशिक भारत में खेल केवल मनोरंजन का साधन नहीं थे; वे सामाजिक संपर्क, संस्थागत विकास और अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधित्व के माध्यम भी बने। हॉकी ने भारतीय खिलाड़ियों को औपनिवेशिक व्यवस्था के भीतर विकसित खेल संस्थानों में भाग लेने तथा बाद में अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्रदान किया।

भारतीय खिलाड़ियों की सफलता ने यह प्रदर्शित किया कि भारतीय प्रतिभा अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धा में प्रभावी प्रदर्शन कर सकती है। उस समय भारतीय हॉकी की उपलब्धियों को व्यापक सामाजिक संदर्भ में देखा गया और खिलाड़ियों की सफलता राष्ट्रीय गौरव से जुड़ने लगी।

हालाँकि औपनिवेशिक काल की खेल व्यवस्था में अवसरों और संसाधनों का वितरण समान नहीं था, फिर भी हॉकी के प्रसार ने विभिन्न सामाजिक और क्षेत्रीय समूहों को एक

साझा खेल मंच प्रदान किया। इस प्रकार हॉकी धीरे-धीरे केवल औपनिवेशिक संस्थाओं से जुड़ा खेल न रहकर भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का हिस्सा बनती गई।

भारतीय हॉकी का ओलंपिक सफर और राष्ट्रीय गौरव

India's Olympic Journey in Hockey and National Pride

भारतीय हॉकी के इतिहास में ओलंपिक प्रतियोगिताओं का विशेष स्थान है। भारत ने 1928 के एम्स्टर्डम ओलंपिक में पुरुष हॉकी में स्वर्ण पदक प्राप्त किया और इसके बाद कई दशकों तक भारतीय हॉकी ने ओलंपिक मंच पर उल्लेखनीय सफलता हासिल की। इन उपलब्धियों ने भारतीय खेल इतिहास में एक विशिष्ट अध्याय का निर्माण किया।

ओलंपिक सफलता का महत्व केवल पदक प्राप्त करने तक सीमित नहीं था। अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारतीय ध्वज के साथ टीम की उपस्थिति और जीत ने देश के लोगों के बीच सामूहिक गौरव की भावना को मजबूत किया। उस समय संचार के साधनों की सीमाओं के बावजूद समाचार-पत्रों और सार्वजनिक चर्चाओं के माध्यम से खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ व्यापक समाज तक पहुँचीं।

भारतीय हॉकी के स्वर्णिम दौर ने खिलाड़ियों को राष्ट्रीय पहचान के प्रतिनिधि के रूप में स्थापित किया। टीम की सफलता ने यह भी दिखाया कि खेल उपलब्धियाँ किसी देश की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा और सामूहिक स्मृति का हिस्सा बन सकती हैं।

बाद के दशकों में भारतीय हॉकी के प्रदर्शन में उतार-चढ़ाव आए, लेकिन प्रारंभिक ओलंपिक उपलब्धियाँ आज भी भारतीय खेल इतिहास और राष्ट्रीय खेल-स्मृति में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

मेजर ध्यानचंद और भारतीय खेल-प्रतिभा का प्रतीकात्मक महत्व

Major Dhyan Chand and the Symbolic Significance of Indian Sporting Talent

Major Dhyan Chand भारतीय हॉकी इतिहास के सबसे प्रसिद्ध खिलाड़ियों में से एक हैं। उन्होंने 1928, 1932 और 1936 के ओलंपिक खेलों में भारतीय हॉकी टीम के साथ स्वर्ण पदक जीते। उनकी खेल-कुशलता और अंतरराष्ट्रीय उपलब्धियों ने उन्हें भारतीय खेल इतिहास में विशिष्ट स्थान प्रदान किया।

ध्यानचंद का महत्व केवल उनके व्यक्तिगत प्रदर्शन तक सीमित नहीं है। वे भारतीय हॉकी के उस दौर का प्रतिनिधित्व करते हैं जब भारतीय टीम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लगातार सफल हो रही थी। उनकी उपलब्धियों ने भारतीय खिलाड़ियों की तकनीकी क्षमता और खेल प्रतिभा को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाई।

समय के साथ ध्यानचंद भारतीय खेल-स्मृति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए। उनकी विरासत का उपयोग खेल अनुशासन, प्रतिभा, निरंतर अभ्यास और उत्कृष्टता के उदाहरण के रूप में किया जाता है। इस दृष्टि से उनका जीवन भारतीय खेल संस्कृति में

व्यक्तिगत उपलब्धि और राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व के बीच संबंध को समझने का महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

स्वतंत्रता आंदोलन और हॉकी की राष्ट्रीय चेतना

The Freedom Movement and National Consciousness through Hockey

औपनिवेशिक भारत में भारतीयों के लिए अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताएँ अपने कौशल और सामूहिक क्षमता को प्रदर्शित करने का एक महत्वपूर्ण मंच थीं। हॉकी में भारतीय टीम की लगातार सफलता ने खिलाड़ियों को केवल खेल प्रतिनिधि के रूप में नहीं, बल्कि उस समय की व्यापक राष्ट्रीय भावना के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण बना दिया।

भारतीय हॉकी की अंतरराष्ट्रीय उपलब्धियाँ ऐसे दौर में सामने आईं जब देश में स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता से संबंधित विचार व्यापक हो रहे थे। खेल मैदान पर भारतीय खिलाड़ियों की सफलता को समाज के विभिन्न वर्गों ने गौरव की दृष्टि से देखा।

हालाँकि यह कहना आवश्यक है कि हॉकी की प्रत्येक उपलब्धि को सीधे स्वतंत्रता आंदोलन की राजनीतिक गतिविधियों से जोड़ना ऐतिहासिक रूप से उचित नहीं होगा। फिर भी खेल उपलब्धियों और विकसित हो रही राष्ट्रीय चेतना के बीच सांस्कृतिक संबंध मौजूद था। हॉकी ने भारतीयों के लिए अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी सामूहिक पहचान प्रदर्शित करने का एक अवसर प्रदान किया।

हॉकी, क्षेत्रीय विविधता और सामूहिक भारतीय पहचान

Hockey, Regional Diversity and Collective Indian Identity

भारतीय हॉकी की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसकी क्षेत्रीय विविधता रही है। पंजाब, ओडिशा, झारखंड, मध्य प्रदेश और देश के अन्य क्षेत्रों ने भारतीय हॉकी को प्रतिभाशाली खिलाड़ियों और मजबूत खेल परंपराएँ प्रदान की हैं। अलग-अलग क्षेत्रों की स्थानीय खेल संस्कृतियों ने मिलकर भारतीय हॉकी की व्यापक पहचान को आकार दिया।

विशेष रूप से आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले खिलाड़ियों ने भारतीय हॉकी में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इससे हॉकी विभिन्न सामाजिक और भौगोलिक पृष्ठभूमियों के खिलाड़ियों को राष्ट्रीय टीम के साझा मंच पर लाने वाला खेल बन सकी।

क्षेत्रीय विविधता भारतीय राष्ट्रीय पहचान की बहुलतावादी प्रकृति को भी दर्शाती है। जब विभिन्न भाषाई, सांस्कृतिक और भौगोलिक क्षेत्रों के खिलाड़ी एक ही टीम के लिए खेलते हैं, तो उनकी व्यक्तिगत और क्षेत्रीय पहचान एक व्यापक राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व से जुड़ जाती है। इस प्रकार हॉकी भारतीय विविधता और सामूहिकता के बीच संबंध को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय हॉकी: उपलब्धियाँ और परिवर्तन

Indian Hockey after Independence: Achievements and Transformations

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय हॉकी ने राष्ट्रीय खेल पहचान में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका बनाए रखी। स्वतंत्र भारत ने अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में अपनी पहचान स्थापित करने के लिए खेलों को एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में विकसित किया। इस दौर में भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने ओलंपिक सहित अनेक अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उल्लेखनीय प्रदर्शन किया।

1948 के लंदन ओलंपिक में स्वतंत्र भारत ने पुरुष हॉकी में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इसके बाद 1952, 1956 और 1964 में भी भारतीय टीम ने स्वर्ण पदक हासिल किए। इन उपलब्धियों ने स्वतंत्र भारत की प्रारंभिक खेल पहचान को मजबूत किया और अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश की उपस्थिति को स्थापित करने में योगदान दिया।

हालाँकि बाद के दशकों में अंतरराष्ट्रीय हॉकी की तकनीक, प्रशिक्षण पद्धति और खेल संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। कृत्रिम टर्फ के बढ़ते उपयोग, तेज खेल शैली और अन्य देशों की प्रतिस्पर्धा ने भारतीय हॉकी के सामने नई चुनौतियाँ प्रस्तुत कीं। इसके बावजूद हॉकी की ऐतिहासिक उपलब्धियाँ भारतीय खेल-स्मृति का महत्वपूर्ण हिस्सा बनी रहीं।

लोकप्रिय संस्कृति, मीडिया और हॉकी की सामाजिक छवि

Popular Culture, Media and the Social Image of Hockey

भारतीय हॉकी के विकास में मीडिया और लोकप्रिय संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। समाचार-पत्रों, रेडियो, टेलीविजन और बाद में डिजिटल मीडिया ने खिलाड़ियों की उपलब्धियों और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं को व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाया। विशेष रूप से ओलंपिक सफलता के समय हॉकी खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ राष्ट्रीय चर्चा का विषय बनीं।

मीडिया ने खिलाड़ियों को केवल प्रतियोगी के रूप में नहीं, बल्कि खेल प्रतिभा और राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व के प्रतीक के रूप में भी प्रस्तुत किया। खिलाड़ियों की जीवन-कथाएँ, संघर्ष और उपलब्धियाँ युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं।

समय के साथ खेल पत्रकारिता और डिजिटल मीडिया ने हॉकी के लिए नए संचार माध्यम उपलब्ध कराए हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से खिलाड़ी और टीम सीधे प्रशंसकों से जुड़ सकती हैं। इस प्रकार मीडिया हॉकी की सामाजिक छवि, लोकप्रियता और सार्वजनिक स्मृति के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

हॉकी और युवा पीढ़ी: प्रेरणा, अनुशासन एवं सामाजिक मूल्य

Hockey and the Youth: Inspiration, Discipline and Social Values

हॉकी युवाओं में खेल-कौशल के साथ अनुशासन, टीमवर्क, नेतृत्व, समय-प्रबंधन और लक्ष्य-निर्धारण जैसे गुण विकसित करने में योगदान दे सकती है। टीम खेल होने के कारण हॉकी खिलाड़ियों को व्यक्तिगत प्रदर्शन के साथ-साथ सामूहिक रणनीति और सहयोग का महत्व समझना पड़ता है।

विद्यालयों, खेल अकादमियों और स्थानीय क्लबों के माध्यम से हॉकी को युवाओं तक पहुँचाया जा सकता है। नियमित प्रशिक्षण युवाओं में शारीरिक सक्रियता और प्रतिस्पर्धात्मक भावना विकसित करने में सहायक हो सकता है।

हॉकी की ऐतिहासिक उपलब्धियाँ युवा खिलाड़ियों को प्रेरित भी करती हैं। ध्यानचंद से लेकर आधुनिक भारतीय खिलाड़ियों तक की उपलब्धियाँ यह दर्शाती हैं कि निरंतर अभ्यास, प्रशिक्षण और टीम भावना खेल विकास के महत्वपूर्ण घटक हैं। इस प्रकार हॉकी युवा विकास और खेल संस्कृति के निर्माण में योगदान देने वाला माध्यम हो सकती है।

महिला हॉकी और राष्ट्रीय खेल पहचान का विस्तार

Women's Hockey and the Expansion of National Sporting Identity

भारतीय महिला हॉकी ने राष्ट्रीय खेल पहचान को एक महत्वपूर्ण नया आयाम दिया है। महिला खिलाड़ियों की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भागीदारी ने भारतीय हॉकी को पुरुष खेल से आगे बढ़ाकर अधिक व्यापक प्रतिनिधित्व प्रदान किया है।

महिला हॉकी की उपलब्धियों ने युवा महिलाओं को खेल क्षेत्र में भाग लेने और प्रतिस्पर्धात्मक खेल को करियर के रूप में देखने के लिए प्रेरित किया है। राष्ट्रीय टीम का अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिनिधित्व महिला खिलाड़ियों की दृश्यता को भी बढ़ाता है।

महिला हॉकी के विकास के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण, खेल सुविधाएँ, सुरक्षित वातावरण, समान अवसर और निरंतर प्रतियोगिताओं की उपलब्धता महत्वपूर्ण हैं। इससे भारतीय खेल पहचान अधिक समावेशी स्वरूप प्राप्त कर सकती है।

आधुनिक भारत में हॉकी की बदलती भूमिका और चुनौतियाँ

The Changing Role and Challenges of Hockey in Modern India

आधुनिक भारत में हॉकी को कई नई परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। क्रिकेट की अत्यधिक लोकप्रियता, खेलों के व्यावसायीकरण, बदलती दर्शक रुचि और अंतरराष्ट्रीय हॉकी में तकनीकी बदलावों ने हॉकी के विकास के लिए नई चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं।

इसके बावजूद भारतीय हॉकी में प्रतिभा विकास की पर्याप्त संभावनाएँ मौजूद हैं। बेहतर प्रशिक्षण केंद्र, वैज्ञानिक खेल प्रशिक्षण, फिटनेस कार्यक्रम, आधुनिक खेल विज्ञान और जमीनी स्तर पर प्रतिभा पहचान इसके विकास में योगदान कर सकते हैं।

ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में उपलब्ध प्रतिभाओं को उचित अवसर प्रदान करना भी महत्वपूर्ण है। खेल अवसंरचना के विस्तार और प्रशिक्षित कोचों की उपलब्धता से हॉकी के आधार को और मजबूत किया जा सकता है।

हॉकी, खेल कूटनीति और भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि

Hockey, Sports Diplomacy and India's International Image

अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताएँ देशों के बीच संपर्क और सांस्कृतिक संवाद का माध्यम भी बन सकती हैं। भारतीय हॉकी टीम की अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भागीदारी ने भारत को वैश्विक खेल मंच पर प्रतिनिधित्व प्रदान किया है।

हॉकी की ऐतिहासिक उपलब्धताओं ने भारत की खेल पहचान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में योगदान दिया। विभिन्न देशों के साथ प्रतियोगिताएँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम और खेल आदान-प्रदान खिलाड़ियों के साथ-साथ संस्थागत संबंधों को भी बढ़ावा दे सकते हैं।

खेल कूटनीति के संदर्भ में हॉकी भारत की अंतरराष्ट्रीय खेल उपस्थिति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। आधुनिक समय में अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं और खेल आयोजनों के माध्यम से सांस्कृतिक संपर्क तथा पारस्परिक समझ को बढ़ावा देने की संभावनाएँ भी बनी हुई हैं।

निष्कर्ष: हॉकी और भारतीय राष्ट्रीय पहचान का निरंतर संबंध

Conclusion: The Continuing Relationship between Hockey and Indian National Identity

भारतीय हॉकी का इतिहास खेल उपलब्धियों से आगे बढ़कर राष्ट्रीय और सांस्कृतिक स्मृति से जुड़ा हुआ है। औपनिवेशिक काल की अंतरराष्ट्रीय सफलताओं से लेकर स्वतंत्र भारत के ओलंपिक प्रदर्शन और आधुनिक महिला एवं पुरुष हॉकी तक, इस खेल ने भारतीय खेल पहचान को अनेक स्तरों पर प्रभावित किया है।

हॉकी की ऐतिहासिक विरासत, क्षेत्रीय विविधता, खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ और युवा पीढ़ी पर इसका प्रभाव इसे भारतीय खेल संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाते हैं। आधुनिक चुनौतियों के बावजूद इसकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक प्रासंगिकता बनी हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Hockey India. (2024). Hockey India begins celebration of 100 years of Indian hockey. Hockey India.

2. Hockey India. (n.d.). Milestones: Indian hockey. Hockey India.
3. Hockey India. (2025). 100 years of Indian hockey: The centenary celebration of Indian hockey. Hockey India.
4. Ministry of Youth Affairs and Sports, Government of India. (2024). Sports in the post-independence era. Government of India.
5. Olympic Studies Centre. (2026). Where the English refused to tread: India's role in establishing Olympic hockey. International Olympic Committee.
6. Hockey India. (2025). Seven days to history: India counts down to 100 years of hockey glory. Hockey India.
7. Hockey India. (2025). Hockey has given India pride of place in Olympics, says Dr. Mansukh Mandaviya as centenary celebrations of Indian hockey begin. Hockey India.
8. Hockey India. (2025). This milestone belongs to the unseen heroes who built the game: Legendary M. M. Somaya reflects on Indian hockey's 100-year journey. Hockey India.
9. Hockey India. (2025). In 1975 Indian team outclassed Pakistan in the final, says B. P. Govinda. Hockey India.
10. Ministry of Youth Affairs and Sports, Government of India. (2026). List of recognised national sports federations for the year 2025. Government of India.

